इंसानों से पहले की कलाकृति

भूमध्य सागर के निकट जिब्राल्टर की एक गुफा में चट्टानों पर उकेरी गई कुछ रेखाओं को देखकर यह निष्कर्ष निकाला जा रहा है कि यह आदिम कलाकृति का एक नमूना है जिसे इंसानों ने नहीं बल्कि निएंडरथल्स ने बनाया है। निएंडरथल्स मानव सदृश जीव थे।

दरअसल भूमध्य सागर के तट पर स्थित ग्रोहम गुफा में प्राणी वैज्ञानिक और जिब्राल्टर संग्रहालय के निदेशक क्लाइव फिनलेसन और उनके साथी उत्खनन कार्य कर रहे थे। उन्होंने पाया कि यहां रहने वाले निएंडरथल मछलियां, झींगे और पक्षियों का भक्षण करते थे। मगर फिर फिनलेसन और उनके साथी फ्रांसिस्को पैचेको उस गुफा में मौजूद एक संकरी-सी दरार के अंदर घुसकर एक और कोठरी में पहुंच गए।

उस कोठरी में एक चट्टान पर करीब 20 से.मी. लंबा-चौड़ा एक चपटा उभार था, किसी मेज़ के समान। इस मेज़नुमा उभार पर कुछ रेखाएं उकेरी गई थीं। टीम का मत है कि ये रेखाएं चट्टान पर बेतरतीबी से चोट करके नहीं बनी होंगी। कई बार निएंडरथल अपने शिकार के टुकड़े करने के लिए उसे चट्टान पर रखकर पत्थर के औज़ारों से चोट करते थे। मगर शोधकर्ताओं ने एक अन्य चट्टान पर ऐसा करके देखा मगर उनका निष्कर्ष है कि ग्रोहम गुफा में पाई गई वे रेखाएं जान-बूझकर, उद्देश्यपूर्ण ढंग से ही उकेरी जा सकती हैं। इन रेखाओं को देखकर लगता है कि निएंडरथल काफी अमूर्त सोच की क्षमता से लैस थे।

अब सवाल आया कि यह कलाकृति कितनी पुरानी है। वैसे तो शैल कलाकृतियों की उम्र का अंदाज़ा लगाना मुश्किल काम होता है मगर फिनलेसन को यकीन है कि ये कलाकृतियां कम से कम 39,000 साल पुरानी हैं। इस निष्कर्ष का आधार यह है कि इस गुफा में जो तलछट मिली है उसमें पत्थर के कई औज़ार पाए गए हैं जिन्हें निएंडरथल ने 30-39 हज़ार साल पहले बनाया होगा। ये कलाकृतियां इस तलछट के भी नीचे हैं। इसका मतलब है कि ये 39,000 साल से ज़्यादा पहले बनाई गई होंगी।

फिनलेसन का मत है कि आधुनिक मानव (होमो) उस इलाके में इसके कम से कम 10,000 साल बाद पहुंचे थे, जब निएंडरथल विलुप्त हो चुके थे। इस हिसाब से देखें तो ये कलाकृतियां आधुनिक मानव ने नहीं बल्कि निएंडरथल्स ने बनाई हैं और इससे साबित होता है कि उनमें अमूर्त सोच की क्षमता थी। फिनलेसन के अनुसार ये अब तक युरोप की सबसे प्राचीन शैल कलाकृतियों के नमूने हैं। इस अध्ययन का विवरण *प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़* में प्रकाशित हुआ है।

बहरहाल, कई अन्य पुरावेत्ताओं का मत है कि चंद रेखाओं के आधार पर ऐसे व्यापक निष्कर्ष निकालना थोड़ी ज़्यादती है। जैसे मानव वैज्ञानिक हैरॉल्ड डिबल को इन रेखाओं और उनके रचयिताओं की पहचान, दोनों को लेकर शंका है। उनका कहना है कि तलछट जमा होने के बाद भी हिलती-डुलती और बहती है। हो सकता है कि उस गुफा में वह तलछट बाहर से आकर जमा हो गई हो। ***(स्रोत फीचर्स)***